L.N. MITHILA UNIVERSITY DARBHANGA (BIHAR)
Dr. Pramod Kumar Sahu, Assitant professor, Guest - Teacher, V. S. J. College Rajnagar, MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsahu2018@gmail.com

B.A PART - III
PAPER - VIII
PSYCHOLOGY (HONOURS)
TOPIC - Watson's Experimental Formulation.

वाटसन एक ऐसा मनोवैज्ञानिक थे जो मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग (Experiment) तथा अर्ध-प्रयोग (Semi-experiment) किये ताकि वे अपनी वस्तुनिष्ठता के दावे को अधिक स्पष्ट एवं प्रयोगात्मक कर सकें। उदाहरण के रूप में तीन ऐसे क्षेत्रों को लिया जा सकता है। जिसमें वाटसन ने अपना गहन प्रयोगात्मक कार्यक्रम प्रारम्भ किया - सीखना, संवेग, तथा स्मृति। इन तीनों का वर्णन निम्नलिखित है।

(1) सीखना - (Learning) - वाटसन ने सीखने पर कहा था, उनके लिए सभी तरह की आदतें सीखने की ही प्रतिफल होती है। और स्वयं निर्णय की तरह के नियमों (principles) अर्थात् बारम्बारता (frequency) तथा नवीनता (recency) के आधार पर होती है। इन दो नियमों के आधार पर वे सरल एवं जटिल सीखना तथा जटिल मानव सीखने की प्रक्रिया की व्याख्या की। उन्होंने थॉर्नडाइक के प्रभाव नियम की आलोचना की और कहा कि यह नियम काफी आत्मनिष्ठ है क्योंकि इसमें सन्तुष्टि तथा खीज जैसे शब्दों का स्पष्ट उपयोग किया गया था, 1915 तक वाटसन पैवलव द्वारा अनुबंधित प्रतिक्रिया पर किये गये प्रयोग से काफी प्रभावित हुए। इसे आधार बनाते हुए वाटसन ने यह दावा कि अनुबंधित अनुक्रियाओं के सहारे न केवल सीखना बल्कि चिन्तन एवं संवेग जैसे व्यवहार की भी सफल व्याख्या सम्भव है। वाटसन ने अपनी शिष्या एवं बाद में पत्नी बननी रेनर के साथ 1920 में अल्बर्ट नामक बच्चे पर एक मशहूर प्रयोग किया जिसमें डर अनुक्रिया के अनुबन्धन की व्याख्या किया

गया था, जब प्रयोग में अनुबंधित उद्दीपक के रूप में तो एक उजला चूहा को तथा स्वाभाविक उद्दीपक के रूप में तीव्र आवाज का प्रयोग किये, कई प्रयासों तक उजला चूहा के दिखलाने के तुरन्त बाद तीव्र आवाज उत्पन्न किया जाता था, जबकि अल्बर्ट डर जाता था, तथा रोने लगता था बाद में देखा गया कि अल्बर्ट मात्र उजला चूहा को देखते ही डर गया, इस तरह की सीखी गयी, अनुक्रिया आगे के प्रयासों में सामान्यीकृत होते पाये गये, क्योंकि अल्बर्ट उजला कोट, उजला कुत्ता आदि से तुरंत डर कर अनुक्रिया करने लगा था

(ग) संवेग - (Emotion) :- वाटसन का दूसरा प्रमुख प्रयोगात्मक कार्यक्रम संवेगों के क्षेत्र में था, जिन्होंने उत्पत्ति के लिये, वे उम्र के बच्चों पर कई अध्ययन किये, यद्यपि वे कुछ अध्ययन की स्वरूप प्रयोगात्मक एवं अप्रयोगात्मक था, तथा कुछ का स्वरूप अवैज्ञानिक था, इसमें से उनका अवैज्ञानिक अध्ययन काफी लोकप्रिय हो गये, वे कई शिशुओं एवं बच्चों के संवेगों की सीखने जन्म अवस्था तक किये और उनके बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे, कि जन्म के समय शिशुओं में तीन स्पष्ट संवेग अर्थात् डर, क्रोध तथा प्यार होते हैं। इसी आधार पर वाटसन का मत था कि संवेग जन्मजात होते हैं। उन्होंने इन तीनों संवेगों के व्यवहारात्मक पक्ष पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने कहा कि डर के बच्चों में अचानक सांस रुकने जैसी अवस्था हो जाती है। आंखें बन्द हो जाती है। तथा होंठ में सिकुड़न हो जाता है। आदि आदि क्रोध की अनुक्रिया में बच्चे अपना शरीर कड़ा कर लेते हैं। तथा हाथ एवं बाँह मार प्रहार करने का कोशिश करते हैं। प्यार में बच्चे हँसते हैं। तथा वो किलकारते हैं। एवं कूजन (cooing) करते हैं। अपने प्रयोगात्मक प्रमाणों के आधार पर वे कुछ ऐसे उद्दीपकों या हालातों को भी पहचान किये जिससे शिशुओं में डर क्रोध एवं प्यार प्रभावित होते हैं। उनका निष्कर्ष यह था कि तीव्र आवाज तथा शारीरिक समर्थन को हटा लेने से बच्चों में डर का संवेग उत्पन्न होता है। उसकी शारीरिक गतिविधि को स्वतंत्रता

Scanned with CamScanner

रुकावट पैदा करने से उनमें रोष उत्पन्न होता है। तथा थपथपाने एवं शरीर के विभिन्न अंगों के सहलाने से उनमें प्यार उत्पन्न होता है। इस आधार पर वाटसन इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि संवेगों की उत्पत्ति कुछ सीमित संवेगों से होती है। बाद में ब्रिजेज ने वाटसन के इस विशेष प्रयोगात्मक कार्यक्रम को थोड़ा आगे बढ़ाया - इन्होंने अपने अध्ययन के आधार पर यह पाया कि जन्म के समय बच्चों में कोई विशिष्ट संवेग स्पष्ट रूप से नहीं पाये जाते हैं बल्कि उस समय उनमें मात्र एक सामान्य उत्तेजन जैसी अवस्था पायी जाती है। इस तरह से ब्रिजेज ने अपने अध्ययन के आधार पर वाटसन के प्रयोगों के निष्कर्ष को उचित नहीं ठहराया।

संवेग के क्षेत्र में वाटसन संवेगात्मक अनुक्रियाओं के सीखने तथा भूलने के तरीकों पर भी विचार किया, वे 11 महीनों के अल्बर्ट नामक बच्चे पर संवेग के सीखने से सम्बन्धित प्रयोग किये, और इस तरह के सीखने का आधार अनुबंधन बतलाया। अनुबन्धित संवेगिक अनुक्रिया को भगाने की जहाँ प्रश्न है। इसके लिए वे कई विधियों का प्रतिपादन किये। जिसमें मानसिक प्राथमिक अनुप्रयोग रोक मौका जिससे डर न लगता हो को उपेक्षित किया जाये, आदि प्रधान हैं। परन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा हो ना सका कि यह विधि कारगर साबित नहीं हुई, इसके बाद एम० सी० जोन्स के साथ मिलकर बालक पर यह प्रयोग किये, इस बालक का नाम पीटर था, जिसमें डर के संवेगिक अनुक्रिया को भगाने के लिए पुनर्अनुबंधन की प्रविधि का उपयोग किये, जब पीटर खाना खा रहा था, तो अनुबन्धित डर उद्दीपक को उससे इतनी दूरी पर रखा गया कि उससे किसी प्रकार की कोई डर उसमें उत्पन्न नहीं होती थी, धीरे-धीरे अगले प्रयासों में खाना खाते समय उस उद्दीपक को पीटर के नजदीक लाया गया, अन्त में देखा गया कि पीटर एक तरफ तो खाना खाते समय उस उद्दीपक को पीटर के नजदीक लाया अन्त में देखा गया कि पीटर एक तरफ तो खाना खा

Scanned with CamScanner

IV

रहा था और दूसरी ओर बिना किसी तरह के डर अनुभव किये वह उद्दीपक को सहला रहा था, आधुनिक समय में वाटसन के इस मौलिक प्राविधि को व्यवहार पुनर्गठित कहा जाता है।

(4) स्मृति - (memory) :- वाटसन तथा कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों के विरोधक आवाज उत्पत्ति जाना जितनी - स्मृति को मन की संकल्पना मानी थी - वास्तव में वे अपने अर्थ प्रतिगामनक प्रेक्षणों के आधार पर स्मृति की एक निष्क्रियपूर्ण व्याख्या प्रदान किया - है। परन्तु, कुछ कौशल या आदत को सीखना आवश्यक है। इसकी अनुपलब्धता के कारण सामग्री गायब जाती तथा कौशलों का विस्मरण हो जाता है। अतः में पुनर्सीखना का आवश्यक होती है। जिसमें व्यक्ति उस कार्य या पाठ को सीखने में पुनः प्रयास करता है। जब कोई व्यक्ति सामग्री या पाठ को प्रत्याह्वान (Recall) करने में असमर्थ रहता है। तो इसका मतलब यह हुआ कि जो पेशीय तथा मौखिक सीखना के दौरान निर्मित हुए थे, वे टूट गए वाटसन द्वारा प्रतिपादित यह निष्क्रिय व्याख्या - पेशीय स्मृति तथा शाब्दिक स्मृति दोनों पर समान रूप से लागू होती है।

Dr. Pravin Kumar Sahu.
Date - 25/08/2020 -
Sub - Psychology -